

- 37 ऽथ नभस्यः प्रौष्ठभाद्रपदः पदः ॥ १५४ ॥
- 38 भाद्रश्चा-
- 39 व्याश्विने त्वाश्वयुजेषा-
- 40 वथ कार्तिकः ।
- 41 कार्तिकिको बाहुलोर्जौ
- 42 द्वा द्वा मार्गादिकावृतुः ॥ १५५ ॥
- 43 हेमन्तः प्रसलो रौद्रो
- 44 ऽथ शैषशिशिरौ समौ ।
- 45 वसन्त इष्यः सुरभिः पुष्पकालो बलाङ्गकः ॥ १५६ ॥
- 46 उज्ज उज्जागमो ग्रीष्मो निदाघस्तप उष्मकः ।
- 47 वर्षास्तपात्ययः प्रावृद्धेधात्कालागमौ क्षरी ॥ १५७ ॥
- 48 शरद्वनात्ययो
- 49 ऽयनं शिशिराद्यैस्त्रिभिस्त्रिभिः ।
- 50 अयने द्वे गतिरुद्गदक्षिणार्कस्य वत्सरः ॥ १५८ ॥
- 51 स संपर्यनूद्घो वर्षं ह्यायनौ ऽब्दं समाः शरद् ।
- 52 भवेत्पैत्रं त्वहोरात्रं मासेनाब्देन दैवतम् ॥ १५९ ॥

37. 38. Der 10te M. (4 W.). — 39. Der 11te M. (3 W.). —
 40. 41. Der 12te M. (4 W.). — 42. Je zwei Monate vom Mârga an
 heissen rtu (Jahreszeit). — 43. Die 1te Jahreszeit (3 W.). — 44. Die
 2te J. (2 W.). — 45. Die 3te J. (5 W.). — 46. Die 4te J. (6 W.). —
 47. Die 5te J. (6 W.). — 48. Die 6te J. (2 W.). — 49. Je drei
 Jahreszeiten, von der 2ten an gerechnet, heissen ajana (Sonnen-
 gang). — 50. Die beiden Gänge (ajana's) der Sonne nach Norden
 und Süden bilden ein Jahr. — 51. Jahr (9 W.). — 52. Tag und Nacht
 währt bei den Pitar's (Manen) einen Monat, bei den Göttern ein Jahr.